DATE 7.10.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec.33-B, CHD.

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-9 'पथ की पहचान') शेष भाग
लेखक - हरिवंश राय बच्चन
पुस्तक - नवतरंग-7

प्यारे बच्चो, सुप्रभात।

आज हम पाठ-9 'पथ की पहचान' का शेष भाग पढ़ेंगे। यह पाठ आपकी पाठ्य पुस्तक नवतरंग-7 के पृष्ठ-75 पर दिया गया है।

बच्चो! कविता के प्रथम खण्ड में हम पढ़ चुके हैं कि हमें अपने जीवन के मार्ग में आगे बढ़ने से पहले अच्छी तरह से विचार कर लेना चाहिए कि हमारे सामने दिखाई देने वाले अनेक रास्तों में से किस रास्ते पर चलना उचित होगा। अब हम कविता की आगे की पंक्तियों को पढ़ेंगे।

है अनिश्चित किस जगह पर सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित किस जगह पर बाग, वन सुंदर मिलेंगे,
किस जगह यात्रा खत्म हो जाएगी, यह भी अनिश्चित,
है अनिश्चित, कब सुमन, कब कंटकों के शर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जाएँगे मिलेंगे कौन सहसा;
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा तू न, ऐसी आन कर ले;
पूर्व चलने के, बटोही, बाट की पहचान कर ले।

बच्चो! इन पंक्तियों में कवि बता रहे हैं कि हे जीवन के मार्ग पर चलने वाले यात्री! तुम्हें यह नहीं पता और न कोई बता सकता है कि तुम्हारे मार्ग में चलते-चलते किस स्थान पर नदी, पर्वत और गुफाएँ मिलेंगी अर्थात् कब, कहाँ तुम्हें कठिनाइयों और बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। साथ ही कहाँ सुंदर वन और उपवन तुम्हें अपने जीवन में ऐसे मिलेंगे।

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

DATE 7.10.24
PAGE No. 2

Tender Heart | High SCHOOL, SEC. 33-B, CHD

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 9 'पथ की पहचान')

यह भी नहीं पता कि तेरे जीवन के मार्ग में कब और किस स्थान पर सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। यह भी निश्चित नहीं कहा जा सकता कि कब तेरी जीवन यात्रा समाप्त होगी अर्थात् कब काल के गाल में समा जाओगे।

यहाँ कवि कहते हैं कि यह बात भी अनिश्चित है कि मार्ग में कब तुझे फूल मिलेंगे और कब काँटे रूपी तीखे बाण तुझे घायल करेंगे। हे मानव! तेरे जीवन में तुझे कब सुख मिलेगा और कब दुख। इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।

बच्चो! कविता में आगे की पंक्तियों में कवि बता रहे हैं कि हे मानव! तुझे तो यह भी नहीं पता कि जीवन के पथ पर चलते हुए अचानक कौन छूट जाएँगे और कौन मिल जाएगा। कवि पथिक को उसका हौसला बढ़ाते हुए कहते हैं कि तू अपने मन में प्रतिज्ञा कर ले कि तुझे जीवन में आगे बढ़ते जाना है और इन कठिनाइयों को पीछे छोड़कर निरंतर चलते जाना है।

अंतिम पंक्ति में कवि कहते हैं कि हे जीवन-पथ के यात्री! तू अपने जीवन के मार्ग पर चलने से पूर्व जीवन में आने वाले सुख-दुख को भली-भाँति जानकर अपने मार्ग की पहचान अच्छी तरह से कर ले। निरन्तर जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए।

इस प्रकार बच्चो! इस कविता के माध्यम से हमें यह शिक्षा मिलती है कि कोई भी कार्य शुरू करने से पहले उस पर अच्छी तरह से विचार कर लेना चाहिए। जीवन में कुछ भी निश्चित नहीं है फिर भी हमें रुकना नहीं चाहिए बल्कि सभी बाधाओं का सामना कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 7.10.24
PAGE No. 3

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 9 'पथ की पहचान')

बच्चो! अब कुछ शब्दों के अर्थ मैं बताने जा रही हूँ

शब्दार्थ:-

सरित - नदी	गिरि - पर्वत
गह्वर - घना	सुमन - फूल
कंटकों - काँटों	शर - बाण
सहसा - अचानक	आन - गौरव

बच्चो! यह कविता यहाँ पूर्ण हो गई है। इसकविता को आप सबने पढ़ा समझा और इसका अर्थ जाना। आशा है यह कविता सब बच्चों को अच्छे से समझ में आ गई होगी।

अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ।

गृहकार्य:-

सब बच्चे पृष्ठ-76 पर दिए पाठ बोध में संक्षेप और विस्तार से दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखने का प्रयास करेंगे। कविता को दो-तीन बार उच्च स्वर में पढ़ेंगे, याद करने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

अंतिम पृष्ठ - 3

Scanned with CamScanner